[redacted]

[redacted]

शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के स्तर

साहित्य की परंपरावादी परिभाषा के अनुसार 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम।' साहित्यकेतर क्षेत्र में भाषा के शब्द या अर्थ के किसी एक पक्ष का उद्घाटन होता है, जो भाषा का पूर्ण पक्ष नहीं है जबकि साहित्य के द्वारा भाषा का पूर्ण पक्ष उद्घाटित होता है। अर्थात् साहित्य एक अमूर्त संकल्पना है, जिसका मूल रूप साहित्यिक कृति द्वारा उद्घाटित होता है। इसलिए कहा गया है कि साहित्य भाषा का सर्वोत्कृष्ट प्रयोग है।

शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के तीन स्तर हैं–

1. कला सामग्री का स्तर– इसमें हम कला सामग्री के स्तर पर भाषा का अध्ययन करते हैं। चूंकि भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य है इसलिए सर्वप्रथम वाक्य स्तर से विश्लेषण प्रक्रिया प्रारंभ होती है, जिसमें ध्वनि, पद, पदबंध और उपवाक्य का अध्ययन किया जाता है। कई लोगों ने शैलीविज्ञान के पूर्व के अध्ययन का स्तर कहा है। इसे भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान कहते हैं। यहाँ शब्दार्थ की प्राप्ति नहीं होती। इसका संबध अभिव्यक्ति से है।
2. कला माध्यम का स्तर– इसमें विश्लेषण का स्तर पूरा पाठ होता है, जिसमें बिंब, कथानक आदि का अध्ययन होता है। इसलिए इसे साहित्यिक शैलीविज्ञान कहते हैं। इस स्तर पर भावार्थ की प्राप्ति होती है। 'कफन' कहानी का 'घीसू', 'माधव' पात्र उस रचना का कला माध्यम है। इसका संबंध कथ्य से है।
3. कला प्रतीक का स्तर– यहाँ पर पूरी साहित्यिक कृति एक पूर्ण कलात्मक प्रतीक है। अभिव्यक्ति और कथ्य के स्तर एक इकाई रचना का अंग बन जाता है। इसमें अंतर्निहित रचना एक संरचना बनाती है। इसलिए इसे संरचनात्मक शैलीविज्ञान कहते हैं। इस स्तर पर प्रतीकार्थ की प्राप्ति होती है।

कहा जा सकता है कि शैलीविज्ञान का अध्ययन वाक्य से प्रारंभ होता है जो कला सामग्री का पक्ष है। परंतु दो वाक्यों में अंतर व्याकरण से बाहर का संदर्भ है, जिसका प्रतिफलन कला माध्यम के रूप में होता है। अर्थात् कला माध्यम उन दो वाक्यों के संबंध का रूपात्मक सौंदर्य है। परंतु दो वाक्यों का भावार्थ क्यों व्यक्त हुआ इसका ज्ञान कला प्रतीक के द्वारा होता है। तात्पर्य यह है कि अर्थ के स्तर पर कला सामग्री में शब्दार्थ, कला माध्यम में भावार्थ और कला प्रतीक में प्रतीकार्थ पाते हैं।

शैलीविज्ञान के अध्ययन का क्षेत्र

साहित्य एक शाब्दिक कला है। साहित्य भाषा का कलात्मक प्रतिफलन है। भाषा के पक्ष से साहित्य का संबंध ललित साहित्य से है, जो मनुष्य के भाव जगत से संबंधित है वहीं कला के पक्ष से साहित्य का संबंध भाषिक कला से है। इन दोनों की संधि शाब्दिक कला के रूप में होती है जिसके अध्ययन का क्षेत्र शैलीविज्ञान से है।

भाषा के दो पक्ष होते हैं– व्यवहारिक और वाङ्मय। व्यवहारिक पक्ष के अंतर्गत वे भाषाएं आती हैं, जिनका प्रयोग दैनिक जीवन शैली में किया जाता है। वाङ्मय के अंतर्गत उपयोगी और ललित साहित्य आते हैं। उपयोगी में आयुर्वेद, अर्थशास्त्र की गणना होती है। ललित साहित्य में रामायण, कुरान, महाभारत आदि की गणना होती है।

कला के भी दो पक्ष होते हैं– ललित कला और उपयोगी कला। उपयोगी कला में कुम्हार, लोहार, बढ़ई की कलाओं का वर्णन होता है। ललित कला में भाषिक और भाषिकेतर कला आते हैं। भाषिकेतर कला में चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्पकला की गणना होती है और भाषिक कला में साहित्यिक कृति आती है। इस प्रकार ललित साहित्य और भाषिक कला के बीच का अध्ययन क्षेत्र ही शैलीविज्ञान का क्षेत्र है।

पेशबंदी या अग्रगामिता

वैज्ञानिक आलोचना पद्धति में काव्य कृति के विश्लेषण हेतु अग्रगामिता एक विशेष उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता है। इसका संबंध अभिव्यक्ति के माध्यंम को वक्र भंगिमा के साथ प्रस्तुत करना है। इसके द्वारा व्यक्ति की आंतरिक संवेदना टूटती है और अनुभूतियों का प्रत्यक्षीकरण होता है। जिससे हम अधिक जुड़े होते हैं उसके प्रति हमारी संवेदना जड़ या यांत्रिक हो जाती है। इस यांत्रिकता को तोड़ने के लिए साहित्यकार पेशबंदी का प्रयोग करता है। इसे अंग्रेजी में 'Foregrounding' कहा जाता है। यह शब्द अंग्रेजी के 'फोटोग्राफी' शब्द से आया है। फोटो के लिए पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है और उस पर व्यक्ति अग्रप्रस्तुत होता है, उभर कर आता है। यह अग्रप्रस्तुति, पृष्ठांकन से वैषम्यता की स्थिति में होती है। अतः यह कथ्य को उभार कर प्रस्तुत करती है। अग्रगामिता के दो उपकरण हैं– 1. सहेतुक विचलन 2. समांतरता 1. सहेतुक विचलन (Deviation) – साहित्यकार अपने अनुभव को व्यक्त करने के लिए भाषा व्याकरण का अतिक्रमण करता है। यह अतिक्रमण सहेतुक अर्थात् किसी कारण से होता है। सामान्य व्यवहार में सामान्य व्याकरण प्रयोग किया जाता है परंतु उसे विशिष्ट बनाने हेतु ही व्याकरण का विचलन होता है। सामान्य व्याकरण कृति की पृष्ठभूमि और इसे विशिष्ट बनाने हेतु व्याकरण का अतिक्रमण अग्रप्रस्तुति है, जो सचेष्ट रूप से किया जाता है।

[redacted]

...सामाजिक परिवेश, नैतिक मूल्य, जाति और ... के साक्ष्य पर समझा और समझाया जाता ... शैली के साक्ष्य पर साहित्य को समझता ... [illegible] ... ने और स... [illegible]

... से स्पष्ट है कि भाषा और साहि... दोनों की सार्थकता को सिद्ध करती... साहित्य में भाषा की सत्ता को ... ता। आलोचना की वैज्ञानिक ... से भाषाविज्ञान और साहित... को ... ई दृष्टि मिली है, जो ... ही क्षे... । साहित्य में ये आलो...नक ... जित करती है और ...विज्ञा... क्षेत्र ... में भाषा के साम..., म... शैली... एकसाथ उजा... करती ... नल भाषावि... [illegible]

संदर्भ

कुमार, सुरेश... (पृ. 83)।

पाण्डेय... [illegible]